❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 44, अंक 27 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 24 मई, 2021 से रविवार 30 मई, 2021
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 198 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

मानवता की सेवा के लिए निःशुल्क भोजन, पानी, ऑक्सीजन के साथ ऑनलाइन चिकित्सा सेवा भी दे रहा है आर्यसमाज

अमेरिकी आर्य समाजों के सहयोग से एम्बूलेंस सेवा आरम्भः दिल्ली एन.सी.आर. में करेगी सेवा

एम्बूलेंस बनेगी मानव सेवा का साधन - सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक आ.प्र. सभा

अमेरिकी आर्यों ने सहयोग देकर हमारी जिम्मेदारी को और बढ़ाया है - धर्मपाल आर्य

सम्पूर्ण विश्व एक परिवार : मानवता की सेवा आर्य समाज का लक्ष्य - भुवनेश खोसला, प्रधान, अमेरिका सभा

उत्तरी अमेरिका की आर्यसमाजों के सहयोग से सारे भारत में 35 स्थानों पर बनाए जाएंगे ऑक्सीजन कंसिस्ट्रेटर बैंक अभी तक जम्मू, गांधीधाम, जामनगर, औरंगाबाद में आरम्भ हो चुके हैं सेवा केन्द्र

मनुष्य वही जो मनुष्यता के लिए मरे - विश्रुत आर्य, मन्त्री, आर्य प्र. सभा अमेरिका

सर्वे सन्तु निरामया - सब सुखी हों सब निरोग हों - प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक आ.प्र. सभा

आर्य कार्यकर्त्ताओं के साहस और सेवा भावना को देखकर अभिभूत हैं हम सब - देव महाजन, ह्यूस्टन (यू.एस.ए.)

29 मई 2021, उत्तरी अमेरिका की आर्य समाजों द्वारा भारत में मानव सेवा के लिए प्रदान की गई एंबुलेंस सेवा का नई दिल्ली में सायं 8 से 10 बजे के बीच जूम एप के माध्यम से भव्य उद्घाटन इस अवसर पर सर्वश्री भुवनेश खोसला, विश्रुत आर्य, धर्मपाल आर्य, विनय आर्य, विद्यामित्र ठुकराल, सुरेंद्र रैली, आर्य सतीश चड्ढा, जोगेन्द्र खट्टर इत्यादि महानुभाव उपस्थित थे। इस मानव सेवा के लिए एंबुलेंस उद्घाटन कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य हरिप्रसाद जी द्वारा यज्ञ से हुआ।

इस अवसर पर श्री विश्रुत आर्य, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका ने यज्ञ के उपरांत अपने उद्बोधन में कहा कि जब भी कहीं विपत्ति आती है तो हम अपना आर्य होने का दायित्व निभाने का प्रयास करते हैं। भारत में बड़ी भारी विपत्ति आई और हम आर्यो ने अपना छोटा सा सेवा का प्रयास किया इसके लिए उत्तरी

सेवा कार्यों की निरन्तरता के लिए अधिक से अधिक सहयोग करें

कोरोना में कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं का अमेरिका के आर्यों ने किया अभिनन्दन

ऑनलाइन आयोजित कार्यक्रम में अमेरिका से किया एम्बूलेंस का लोकार्पण

- शेष पृष्ठ 3, 4, 5 एवं 6 पर

किया गया। इस अवसर पर कोरोना काल में आर्य समाज द्वारा की गई सेवाओं की प्रस्तुति का विशेष कार्यक्रम अत्यंत प्रेरणा दायक सिद्ध हुआ। जिसको देखकर आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका सहित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली, अखिल भारतीय दयाननद सेवाश्रम संघ एवं आर्यजनों ने समर्पित कार्यकर्त्ताओं को आशीर्वाद और शुभकामनाएं दी। आभार अभिव्यक्ति के इस कार्यक्रम में अध्यक्ष श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, आशीर्वचन प्रदान करने वाले आर्य पथिक श्री गिरीश खोसला जी, उद्घाटनकर्त्ता वरिष्ठ आर्य नेता श्री देव महाजन जी और विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री प्रकाश आर्य जी उपस्थित थे।

कोविड काल में आर्यसमाज की ओर से सेवा कार्य

प्रतिदिन हो रहा है 10000 लोगों को भोजन वितरण

दानी महानुभावों एवं आर्य संस्थानों से दिल खोलकर सहयोग की अपील

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दानी महानुभावों के सहयोग से गरीब, जरूरतमंद परिवारों एवं कोविड संक्रमित लोगों को भोजन पहुंचाने के लिए आर्यसमाज की ओर भोजन वितरण सेवा आरम्भ की है। रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, राजाबाजार में सुबह-शाम 5-5 हजार भोजन पैकेट तैयार करके दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में वितरणार्थ भेजे जा रहे हैं। आर्यसमाज के कार्यकर्ता भोजन पैकिंग एवं वितरण में अपना योगदान दे रहे हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों तथा सभी संगठनों से इस कार्य में तथा अन्या सेवा कार्यों में सहयोग की अपील करती है। समस्त दान दाताओं के नाम सभा के मुख पत्र साप्ताहिक आर्यसन्देश में प्रकाशित किए जाएंगे। समस्त दानी महानुभावों से निवेदन है कि अधिकाधिक सहयोग प्रदान करें। अपनी दान राशि नकद/चैक/ड्राफ्ट के माध्यम से निम्नांकित बैंक खाते में जमा करा सकते हैं -

Delhi Arya Pratinidhi Sabha

A/c No. 910010001816166 IFSC Code : UTIB0000223 Axis Bank Karol Bagh

आप पेटीएम, फोनपे, गूगल पे, भीम पे, मास्टर, वीजा/ रुपे से भी **QR** कोड स्कैन करके दान कर सकते हैं। कृपया दान राशि जमा करते ही अपनी डिपोजिट स्लिप/मैसेज मो.नं. 9540040388 पर व्हाट्सएप्प कर दें, जिससे आपको आपके दिए गए सहयोग रसीद यथाशीघ्र भेजी जा सके। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।** - *महामन्त्री*

देववाणी - संस्कृत **वेद-स्वाध्याय**

प्रभो! मेरी पुकार सुन

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। -ऋ. 6/47/11
ऋषिः गर्गः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः विराट्त्रिष्टुप्।।

शब्दार्थ - त्रातारं इन्द्रम्= पालन करने वाले इन्द्र को, **अवितारं इन्द्रम्**= रक्षा करनेवाले इन्द्र को हवे हवे **सुहवम्**= एक-एक संग्राम में सुख से पुकारने योग्य **शूरं इन्द्रम्**=पराक्रमी इन्द्र को और **शक्रं इन्द्रम्**=सर्वशक्तिमान् इन्द्र को **पुरुहूतं इन्द्रम्**=जिसे असंख्यों सत्पुरुषों ने समय-समय पर पुकारा है-उस इन्द्र को मैं भी **ह्वयामि**=पुकारता हूं, बुलाता हूं। **मघवा इन्द्रः**=वह ऐश्वर्यवान् **इन्द्र नः स्वस्ति धातु**=हमारा कल्याण करे

विनय- यह संसार एक रणस्थली है। इसमें प्रत्येक मनुष्य अपनी समझ के अनुसार किसी-न-किसी विजय को पाने में लगा रहता है और उसके लिए दिन-रात संघर्ष में लग जाता है। यद्यपि इन संघर्षो में विजय पाने के लिए मनुष्य प्रायः अपने शरीर-बल, बुद्धि-बल, संगठन-बल, विज्ञान-बल, मित्र-बल, सैन्य-बल आदि बलों का प्रयोग करता हुआ अभिमान से समझता है कि मैं इन बलों द्वारा ये सब लड़ाइयाँ जीत लूँगा, परन्तु एक समय आता है जब मनुष्य इन सब बाह्य-बलों से हारकर, निराश होकर, संसार की किसी अज्ञात शक्ति को ढूंढने व पुकारने लगता है। 'हे राम', या 'अल्लाह' या 'O my God' आदि कहकर किसी-न-किसी नाम से, हे इन्द्र! असल में वह तुझे पुकार उठता है। तब पता लगता है कि, हे संसार की अज्ञात, अदृष्य शक्ते! तू ही एकमात्र शक्ति है। संसार के शेष सब बल तेरे ही आधार से बल हैं। जब तू चाहता है तब वे बल होते हैं, जब तेरी इच्छा नहीं होती तब किसी भी बल में शक्ति नहीं रहती। इसलिए, हे इन्द्र! तू ही मेरा सच्चा पालक है ओर तू ही एकमात्र सब आपत्तियों से मेरा रक्षक है। तुझ ही महापराक्रमी को हर संग्राम में पुकारना चाहिए। तेरा ही पुकारना शोभन है, सुफलदायक है और किसी को पुकारना निष्फल है, बेकार है। पुकारा हुआतू भक्तजनों के संकट एक क्षण में दूर कर देता है। तू सर्वशक्तिमान् है। अतएव तू 'पुरुहूत' है, सदा से जबसे सृष्टि चली है सन्त लोग तुझे आड़े समय में पुकारते रहे हैं, याद करते रहे हैं। हे शक्र! तुझे छोड़कर मनुष्य और किसे पुकारे? इसलिए, हे इन्द्र! मैं भी तेरी पुकार मचा रहा हूं। मघवन्! तू मेरे लिए कल्याणकारी होता हुआ मेरी पुकार सुन। मैं निश्चय से जानता हूं कि मैं तेरा पवित्र नाम लेता हुआ अपने इस जीवन की सब लड़ाइयों में विजय पाता चला जाऊँगा। मुझे किसी युद्ध में किसी भी अन्य हथियार की आवश्यका नहीं। बस, तू मेरी वाणी पर रहे, यही चाहिए। तेरा नाम पुकारना मुझे सब विपत्तियों से पार कर देगा।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

125 वर्षों से भी पुराना रहा है आर्य समाज के सेवा कार्यों का इतिहास

वैश्विक महामारी कोरोना में आर्यसमाज के सेवा कार्य

इतिहास तुलना नहीं तो अध्ययन जरूर करेगा

.....हर एक चीज के दो पहलु होते हैं- एक अच्छा, दूसरा बुरा। इस कारण लॉकडाउन के दौरान जहाँ महामारी पर नियंत्रण पाने की कोशिश हुई वहां बुरा ये हुआ कि राजधानी दिल्ली समेत बड़े शहरों में दिहाड़ी मजदूर, गरीब, बेसहारा, झुग्गी-झोपडी में रहने वाले लोग, जो दैनिक मजदूरी करके अपनी गुजर बसर करते थे उनके सामने भूख मुंह खोलकर खड़ी हो गयी। जेब में पैसा नहीं, घर में राशन नहीं, करे तो क्या करें! वेद कहता है- 'केवलाघो भवति केवलादी' अर्थात अकेला खाने वाला पाप का भागीदार होता है तो ऐसी अवस्था में सामने आकर एक बार फिर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक बार फिर मोर्चा संभाला। ये मोर्चा था भूख को हराने का, ये मोर्चा था महामारी से बचे लोगों को भूख से बचाने का। इस कोरोना काल में ऐसे असहायों, गरीबों, रिक्शा चालकों व मजदूरों के भूखे परिवारों को दिल्ली आर्य समाज की ओर से भोजन वितरण का कार्य शुरू किया और देखते ही देखते भारत भर की प्रांतीय सभाएं और आर्य समाजें आगे आई और भय और भूख से लड़ने का संकल्प लिया।.....

अपने आरम्भिक युग में आर्यसमाजियों द्वारा किये गये कार्य, जिनमें देश की आजादी के साथ अनाथों, गरीबों की सेवा करने वाले वीरों की कितनी ही कहानियाँ और किस्से सुनने को मिले। सबसे बड़ी मिसाल सुनने को मिली पंडित रुलियाराम जी और उनकी टीम द्वारा प्लेग बीमारी के दौरान किए गए सेवा कार्यो की। कैसे वे प्लेग से ग्रसित लोगों के बीच जाते और अपनी सात-आठ रुपये के वेतन में से भी बचाकर वह कुछ पुस्तकें बाँटते, कुछ दवाईयाँ ले रोगियों की सेवा करते। हालाँकि आज उन बातों को कोई सौ वर्ष बीत गये, पर वे सेवा कार्य इतिहास का एक अनूठा उदहारण बन चुके हैं। आज उनके कार्यों की तुलना भी नहीं हो सकती है, लेकिन आरम्भिक आर्य समाज के लोगों ने जो सेवा की, आज उसका प्रतिफल यह रहा कि जब देश पर कोरोना महामारी की विपदा आई तो आर्य समाज के लोग फिर मैदान में उतरे तथा सेवा कार्यों की श्रेणी में मील का एक और पत्थर गाड़ दिया।

सर्वविदित है कि पिछला वर्ष और यह वर्ष देश के लिए आपदा और महामारी से ग्रसित रहा। एक वायरस के कारण लोग घरों में कैद रहे, भारत समेत दुनिया भर से प्रतिदिन मौत के आंकड़े भयावह रहे। हालाँकि संकट अभी टला नहीं, आज भी हम उसी दौर में जी रहे हैं, जब इन्सान के इन्सान के लिए एक बायोलॉजीकल बम की तरह लग रहा है। इसी कारण इस समय को आपदा या विपदा के तौर पर इतिहास हमेशा याद रखेगा। क्योंकि जब राज्यों की सरकारों द्वारा लॉकडाउन लगाया गया तब लोग घरों में कैद होकर रह गये। लॉकडाउन लगाने का आशय सिर्फ इतना था कि किसी तरह फैलती महामारी को रोका जा सके और इससे काफी हद तक अंकुश लगा भी।

परन्तु हर एक चीज के दो पहलु होते हैं- एक अच्छा, दूसरा बुरा। इस कारण लॉकडाउन के दौरान जहाँ महामारी पर नियंत्रण पाने की कोशिश हुई वहां बुरा ये हुआ कि राजधानी दिल्ली समेत बड़े शहरों में दिहाड़ी मजदूर, गरीब, बेसहारा, झुग्गी-झोपडी में रहने वाले लोग, जो दैनिक मजदूरी करके अपनी गुजर बसर करते थे उनके सामने भूख मुंह खोलकर खड़ी हो गयी। जेब में पैसा नहीं, घर में राशन नहीं, करे तो क्या करें! वेद कहता है- 'केवलाघो भवति केवलादी' अर्थात अकेला खाने वाला पाप का भागीदार होता है तो ऐसी अवस्था में सामने आकर एक बार फिर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने एक बार फिर मोर्चा संभाला। ये मोर्चा था भूख को हराने का, ये मोर्चा था महामारी से बचे लोगों को भूख से बचाने का। इस कोरोना काल में ऐसे असहायों, गरीबों, रिक्शा चालकों व मजदूरों के भूखे परिवारों को दिल्ली आर्य समाज की ओर से भोजन वितरण का कार्य शुरू किया और देखते ही देखते भारत भर की प्रांतीय सभाएं और आर्य समाजें आगे आई और भय और भूख से लड़ने का संकल्प लिया।

इस समय सबसे बड़ा संकट जो महामारी के साथ खड़ा था, वह था महामारी से प्राण गंवाने वाले लोगों का अंतिम संस्कार। रोजाना संक्रमिते मरीजों की मौतें लगातार बढती जा रही थी, कोरोना के प्रति लोगों के मन में डर इस कदर बैठ गया कि वे किसी और वजह से भी मौत होने पर मृतक के पास नहीं जा रहे। बाहरी लोग तो दूर उसके अपने परिजन भी मृतक के शव के पास नहीं जाना चाहते थे। अंतिम संस्कार स्थल पर लाश अधिक और क्रियाकर्म करने वाले कम नजर आ रहे थे। हालात ऐसे कि नए संक्रमितों ने अस्पताल और और मौत के आंकड़ों ने श्मशान घाटों की व्यवस्था बिगाड़ दिया। वहीं, दूसरी ओर जहां लोग मरीजों की लावारिस लाश को छूने तक से इंकार कर रहे थे। तब श्मशान घाटों पर शवों के अम्बार के बीच आर्य समाज द्वारा अंतिम संस्कार के लिए निःशुल्क हवन सामग्री उपलब्ध कराई गयी। आर्य समाज के कार्यकर्ता विभिन्न श्मशान घाटों पर सक्रिय हो गये, लोगों को हौंसला देते हुए अंतिम क्रियाक्रम में मदद करने लगे। वे जलती चिताओं पर हवन सामग्री अर्पण करते, परिजनों को संस्कार के लिए हवन सामग्री बांटते और जो लोग हिम्मत करके अपने किसी परिजन का अन्तिम संस्कार करने के लिए श्मशान घाट पहुंचते, उन्हें गर्मी से राहते देने के लिए पीने के पानी उपलब्ध कराते। बिहार जैसे राज्यों में जब पौराणिक पंडित संक्रमित व्यक्ति की मौत के बाद उसका श्राद्ध तक करने में कतराने लगे, तब आर्य समाज ने विधि विधान से कर्मकांड शुरू किए। इसके अलावा दिल्ली समेत अलग-अलग राज्यों में आर्य प्रतिनिधि सभाओं तथा आर्य समाजों द्वारा यज्ञ यात्रा निकाली ताकि लोगों को बीमारी के साथ भय से बाहर निकाला जा सके। यज्ञ यात्रा के मध्य लॉकडाउन से घरों में बन्द लोगों को खाली समय में पढने के लिए सत्यार्थ प्रकाश भी वितरण किये।

परन्तु महामारी ने इतनी तेज गति से पांव पसारे की अधिकांश राज्यों की स्वास्थ सेवाएं मानों चरमरा ही गयी। लेकिन देश अपना है, हर एक जीवन कीमती है, क्योंकि इसमें रहने वाले लोग भी तो अपने ही है। और स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने भी तो कहा था कि संसार का उपकार करना हमारा मुख्य उद्देश्य है। महामारी से संघर्ष सिर्फ एक मोर्चे पर नहीं था। संक्रमित व्यक्ति को कहीं अस्पताल में बैड की तलाश थी, तो अस्पतालों को ऑक्सीजन की। कहीं लोग अस्पताल में ऑक्सीजन की कमी से दम तोड़ रहे थे तो कोई मरीज अपने घर पर ही बिना ऑक्सीजन के लिए तड़फ रहा था। जब सेवा का ये कार्य तेज गति से चला तो साथ खड़े हो गये, सात समन्दर पार अमेरिका में बसे आर्य समाज के लोग। अमेरिका में रह रहे आर्य समाज के लोगों ने 100 से ज्यादा ऑक्सीजन कंसिस्ट्रेटर भारत भेजे ताकि कोई गरीब या बेसहारा ऑक्सीजन की कमी महसूस न कर पाए। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने निःशुल्क ऑक्सीजन कंसिस्ट्रेटर उपलब्ध कराने की सेवा आरम्भ की। मरीजों को मिलने लगी ये सुविधा वो भी बिल्कुल निःशुल्क और दिल्ली और इसके बाहर भी भेजे जाने लगे ऑक्सीजन कंसिस्ट्रेटर। जिनको ये मदद मिली उन्होंने इसका दिल खोलकर स्वागत तो किया ही साथ ही इस सुविधा के लिए आर्य समाज का धन्यवाद भी प्रकट किया। मरीजों तक ऑक्सीजन कंसिस्ट्रेटर, ऑक्सीजन सिलेण्डर पहुंचाने तथा मरीजों की सेवा के साथ-साथ अन्य सेवा करने क लिए सभा द्वारा नई खरीदी गई एम्बूलेंस की सेवा भी जन-साधारण को उपलब्ध कराई गई।

ऑक्सीजल, भोजन, राशन, आर्थिक सहयोग, एंबुलेंस सेवा से लेकर श्मशान घाट में सामग्री अर्पण, पीने का पानी वितरण हो या गली-गली यज्ञ धूनि, या घर-घर यज्ञ। ये सभी सेवाएं प्रदान करके दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने दानी महानुभावों द्वारा प्रदान किए गए सहयोग से आर्य समाज के उस नियम को सार्थक किया गया जिसमें स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने कहा था कि संसार का उपकार करना हमारा मुख्य उद्देश्य है।

- सम्पादक

कोरोना काल में आर्य समाज के सेवा कार्यों की हो रही है चहुंओर सराहना

पूर्व केन्द्रीय मन्त्री डॉ. सत्यपाल सिंह, पूर्व महापौर एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री आदेश गुप्ता तथा सांसद श्री मनोज तिवारी जी ने किया आर्यसमाज के सेवा केन्द्र का दौरा

आर्य समाज का इतिहास मानवसेवा का इतिहास रहा है। कोरोना महामारी के कहर में आर्य समाज द्वारा संचालित राहत बचाव के विभिन्न प्रकल्पों से हजारों लोग लाभान्वित हुए हैं। पूरे विश्व में आर्य समाज ही वह सेवाभावी संगठन है जिसने पूरी दिल्ली और एन.सी.आर. के श्मशानों में जा-जाकर कोरोना से मृतकों के अंत्येष्टि संस्कार में खुद अपने हाथों से औषधीय सामग्री से आहुति देकर पर्यावरण को दूषित होने से बचाया और मृतकों के परिजनों के लिए पीने के पानी की व्यवस्था की। आर्य समाज ने 3 मई 2021 को पर्यावरण की शुद्धि के लिए लाखों परिवारों ने एक साथ यज्ञ किए। इस बार ऑक्सीजन की कमी के कारण बहुत से लोगों को असमय जान गंवानी पड़ी, ऑक्सीजन की किल्लत को देखते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के सहयोग से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर बैंक की स्थापना कर हजारों लोगों को मौत के मुंह से बचाने का महत्वपूर्ण कार्य

- शेष पृष्ठ 8 पर

कोरोना सेवा केन्द्र का निरीक्षण करने पहुंचे श्री मनोज तिवारी, श्री आदेश गुप्ता एवं डॉ. सत्यपाल सिंह जी को जानकारी देते सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं श्री जोगेन्द्र आर्य जी

प्रथम पृष्ठ का शेष मानवता की सेवा के लिए निःशुल्क ....

अमेरिका कि सभी आर्य समाजों के अधिकारी सहयोगी महानुभावों का धन्यवाद करते हुए मैं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों और कार्यकर्ताओं को भी बधाई देता हूं कि उन्होंने संकट के समय में पूरे समर्पित भाव से कार्य किया। श्री विश्रुत जी ने अपने उद्बोधन में राम सेतु का जिक्र करते हुए कहा कि चाहे हमारा सेवा का कार्य तिनके के बराबर हो लेकिन भावना बड़ी है यह अपने आप संतोष की बात है। मैथिलीशरण गुप्त की एक पंक्ति का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि मनुष्य वही है जो मनुष्यता के लिए मरे। मानव सेवा के लिए प्रदान की गई एंबुलेंस हेतु सभी दानदाताओं का अधिकारियों का उन्होंने धन्यवाद किया

श्री विनय आर्य जी ने नई दिल्ली से कार्यक्रम को आगे बढ़ते हुए सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका,

आर्यसमाज कोरोना सेवा केन्द्र ऑक्सीजन कंसिस्ट्रेटर प्राप्त करते परिजन। कंसिस्ट्रेटर को ऑपरेट करने की जानकारी देते कार्यकर्ता। रोगियों की सेवा करता ऑक्सीजन कंसिस्ट्रेटर एवं उपयोग के बाद वापस सेवा में जाने से पूर्व मशीन को सेनिटाईज करते आर्य कार्यकर्ता

आर्यसमाज से ऑक्सीजन कंसिस्ट्रेटर सेवा प्राप्त करने वाले महानुभावों द्वारा विजिटर बुक में लिखे गए विचार/टिप्पणी

we are very thankful to the people of arya Samaj that they helped us, we were in lot of tension at that time due to there help we were able to survive.
Thanks to all the people of this place.

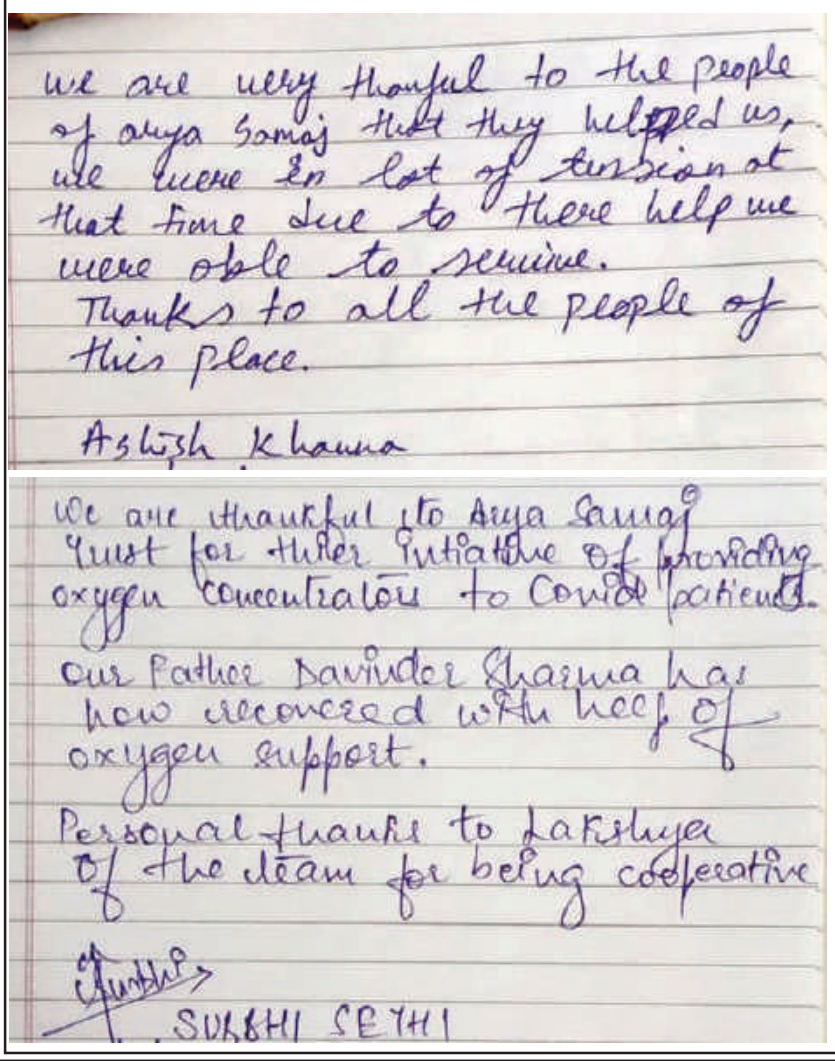

Ashish Khanna

We are thankful to Arya Samaj Trust for their initiative of providing oxygen concentrator to Covid patients.
Our Father Davinder Sharma has now recovered with help of oxygen support.
Personal thanks to Lakshya of the team for being cooperative

SURBHI SETHI

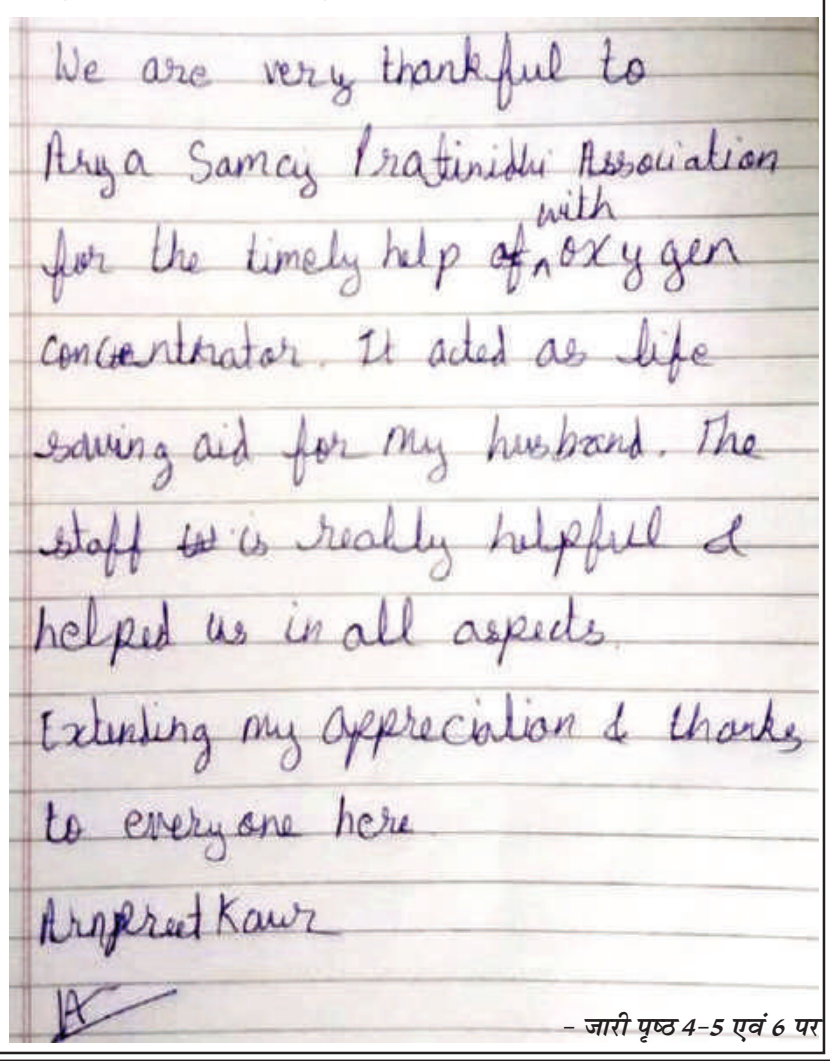

We are very thankful to Arya Samaj Pratinidhi Association for the timely help of oxygen concentrator with. It acted as life saving aid for my husband. The staff is really helpful & helped us in all aspects.
Extending my appreciation & thanks to everyone here.

Arapreet Kaur

- जारी पृष्ठ 4-5 एवं 6 पर

कोरोना से प्रभावित गरीब, असहाय, नि:शक्त परिवारों एवं संक्रमित रोगियों और उनके तीमारदारों के लिए नि:शुल्क भोजन वितरण

दिल्ली में आर्य समाज की रसोई में बनता है प्रतिदिन 10 हजार लोगों का भोजन

रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल में बनाई गई रसाई में सेवा करते आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता - स्वच्छता, सफाई और पौष्टिकता का रखा जाता है विशेष ध्यान

12 वाहनों के वाहनों के माध्यम से विभिन्न स्थानों पर वितरित किए जाते हैं - सब्जी, रोटी, चावल के पैकेट

ऐसे कोरोना संक्रमित रोगी जो अकेले रहते हैं, उनके लिए दिल्ली आर्य समाज की ओर से घर-घर पहुंचाया जा रहा है नि:शुल्क विशेष पौष्टिक भोजन

दिल्ली में अनेक स्थानों पर आर्यसमाज स्तर पर भी किया जा रहा है भोजन वितरण - आर्यसमाज डोरी वालान द्वारा भोजन वितरण

जे.बी.एम. ग्रुप एवं नील मैटल के कोर्डिनेटर आर्यसमाज के कोरोना सेवा केन्द्र की रसोई का निरीक्षण

दिल्ली सभा सहित समस्त आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम तो एक बहाना है, हमें तो सेवा कार्यों को आगे बढ़ना है। कोरोना महामारी कब आएगी, कैसे रिएक्ट करेगी, कितनी खतरनाक होगी यह किसी को पता नहीं था, लेकिन जब हालत खराब हुए तो जिस चीज की सबसे ज्यादा जरूरत थी ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के सहयोग से प्राप्त हुए और दिल्ली सहित पूरे भरत में लोगों की जान बचाने में काम आए। श्री विनय जी ने उपस्थित आर्यजनों को बताया कि पिछले 25 दिनों से लगातार अपनी और अपनों की जान की परवाह न करते जिन

- *जारी पृष्ठ 5 एवं 6 पर*

प्रथम पृष्ठ का शेष

दिल्ली के विभिन्न श्मशान घाटों में नि:शुल्क हवन समग्री वितरण, अर्पण एवं परिजनों के लिए पीने के पानी की सेवा करते आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता

यज्ञधूम्रं एवं यज्ञ यात्राओं के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में जड़ी-बूटियों द्वारा निर्मित हवन सामग्री एवं गौघृत से वायुमंडल के शुद्धिकरण का कार्य

पंचकुला शक्ति नगर (अमृतसर) आर्यसमाज अमरावती डी.एल.एफ. (हरियाणा) आर्यसमाज दादुपुर करनाल

दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों - कीर्ति नगर, पटेल नगर एवं पूर्वी दिल्ली यमुनापार की कालोनियों में यज्ञ फेरियों के कार्यक्रम

यज्ञधूम्रं एवं यज्ञ यात्राओं में हवन कुण्ड में आहुतियां अर्पित करने वाले महानुभावों को लॉकडान में स्वाध्याय के लिए सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते हुए

लॉक डाउन से प्रभावित गरीब परिवारों को आर्यसमाज मानसरोवर पार्क, डोरीवालन एवं अन्य आर्य सस्थाओं द्वारा सूखा राशन वितरण

महानुभावों ने अदभुत सेवाएं की है उनमें डॉ रमेश गुप्ता जी, श्री संजय जैन जी, डॉ. कुलभूषण गुलाटी जी, डॉ. राजेंद्र गांधी जी, श्री हरि वार्ष्णेय जी, श्रीमती सुनीता बुग्गा जी, श्रीमती सती गुरुदयाल जी, श्री रणवीर कुमार जी, श्री संजीव गोयल जी, श्री संजय सूद जी, श्री विकास आर्य जी एवं अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी, श्री मनीष भाटिया जी इत्यादि ने मानव सेवा के महान उदाहरण प्रस्तुत किए। इन सभी का स्वागत किया गया।

इसके उपरांत आर्यसमाज द्वार किये गए कार्यों की विस्तृत वीडियो रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जिसमे आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के आर्यवीरों द्वारा शमशान घाटों में कोरोना मृतकों की जलती चिताओं पर हवन सामग्री अर्पण करना, ऑक्सीजन कंसिस्ट्रेटर की कमी के कारण बेहाल लोगों को ऑक्सीजन कंसिस्ट्रेटर प्रदान करना, चलाना सिखाना, पोष्टिक भोजन बनवाना, पैकिंग करना और वितरण करना, सैनिटाइजेशन करना, तथा यज्ञ धूम एवं यज्ञ रथों के माध्यम से गाली-गली में यज्ञाहुतियां प्रदान करना आदि के वीडियो में जीवन्त दृश्य देखकर सभी आर्यजन अभीभूत हो गए। सभी ने शमशान घाटों

- जारी पृष्ठ 6 पर

Makers of the Arya Samaj : Maharishi Dayanand Saraswati

Continue From Last issue

Marriage

After sometime his friends thought it proper to inform his father of his intentions. They told him that Mool Shankar was about to leave home. This made his parents very anxious. "What should we do," they asked themselves, "to prevent him from doing this? Can't we do anything to make him take a little more interest in life?"

They came to the conclusion that the only thing which would make him take some interest in life was marriage. "Marriage will surely banish all such thoughts from his mind," they said. With this end in view they made arrangements for his marriage, but Mool Shankar did not like this. He did not want to be fettered by marriage in any way. He therefore told his friends what he felt about it. They told his parents that Mool Shankar did not want to be married yet. They had, therefore, to postpone it. But this did not meant the end of his troubles. His great desire was to leave home. But the more he thought about it, the more difficult it seemed to him. At last he hit upon a plan. He asked his father to send him to Benares. "I could learn astronomy, grammar and medicine there," he said. But hi parents did not want him to go to Benares.

Mool Shankar did not press this point very much. But when his father asked him to look after their lands, he refused. He said that this kind of work did not interest him. Months passed away, yet Mool Shankar's desire to leave home did not abate. He still found it difficult to get his parents' permission. After thinking over it for sometime he made another proposal to them. A few miles away from his home lived a learned Brahmin. Pupils from all parts came to study with him. Mool Shankar expressed a desire to his father to go and read with him. The father readily consented, so the young man set off.

The teacher liked the new pupil. He was so intelligent and bright, so strong and fearless. The teacher and the pupil had many talks together in which they discussed various subjects. It was during one of these talks that Mool Shankar expressed his strong dislike of marriage. "I would rather die than marry", he said. "How can anyone who wants to acquire knowledge think of marriage?"

.....The teacher knew the joys of a happy home and the pride of rearing up a family. Moreover, Mool Shankar's father was his great friend. He knew how keen he was on getting his son married and on continuing the family. So, as soon as he heard the views of his pupil he felt very perturbed. He then took the earliest possible opportunity to communicate these things to his pupil's father. "Your son," he wrote, "does not want to marry. He thinks it better to run away from home than to be chained in this way. So keep an eye on him and do not let him do anything rash which will disgrace the family." .....

The teacher knew the joys of a happy home and the pride of rearing up a family. Moreover, Mool Shankar's father was his great friend. He knew how keen he was on getting his son married and on continuing the family. So, as soon as he heard the views of his pupil he felt very perturbed. He then took the earliest possible opportunity to communicate these things to his pupil's father. "Your son," he wrote, "does not want to marry. He thinks it better to run away from home than to be chained in this way. So keep an eye on him and do not let him do anything rash which will disgrace the family."

As soon as Mool Shankar's father heard, he took his son away from the school. He then kept him at home. In the meantime he made preparations for his son's marriage. The son watched all these without making any protest, but all the time he went on making his own plans secretly. What could he do otherwise? Here was a young man who wanted to devote his life to acquiring knowledge, but his parents would not let him do so. He did not want to be fettered by marriage but his father insisted on getting him married. He wanted to live for God, but his people chose to tie him down to worldly things.

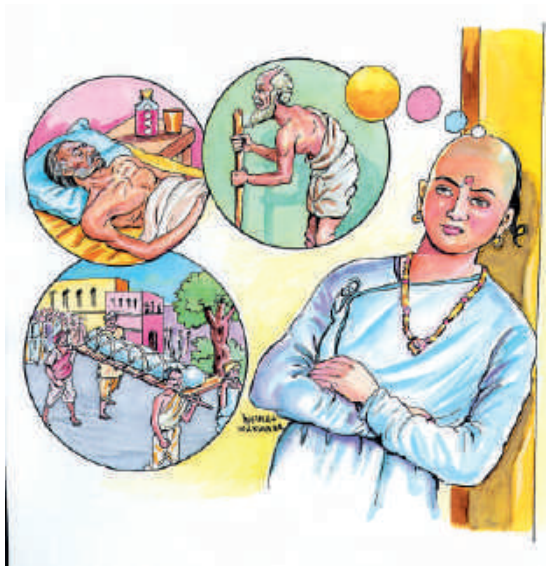

At last a day was fixed when the marriage was to be celebrated. For Mool Shankar this was a day oftrial. He said to himself, ''Now or never." So he at once. made up his mind to leave home. He did so without telling anybody. You can well imagine how disappointed the father felt when he discovered his son had gone.

To be continued.....

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

संस्कृत वाक्य प्रबोध

क्रयविक्रयार्घ-कुसीद-उत्तमर्णाधमर्ण राजाप्रजासम्बन्धप्रकरणम्

गतांक से आगे -

संस्कृत	हिन्दी
240. एतद्रुप्यैकेन कियन्मिलति ?	ये घी और मक्खन एक रुपया से कितना मिलता है ?
241. प्रस्थत्रयम्।	तीन सेर।
242. तैलस्य कियच्छुल्कम् ?	तैल का क्या भाव है ?
243. मुद्राचर्तुथांशेनैकसेटकं प्राप्यते।	चार आने का एक सेर प्राप्त होता है।
244. अस्मिन्नगरे कति हट्टास्सन्ति ?	इस नगर में कितनी दुकानें हैं ?
245. पञ्चसहस्राणि।	पांच हज़ार।
246. शतं मुद्रा देहि।	सौ रुपये दीजिये।
247. ददामि परन्तु कियत् कुसीदं दास्यसि ?	देता हूं, परन्तु कितना ब्याज देगा ?
248. प्रतिमासं मुद्रार्द्धम्।	प्रति महीने आठ आने।
249. भो अधमर्ण ! यावद्धनं त्वया पूर्वं गृहीतं तदिदानीं दीयताम्।	हे करजदार ! जो धन तुमने पहले लिया था वह अब दे।
250. मम साम्प्रतं तु दातुं सामर्थ्यं नास्ति।	मेरा इस समय तो देने का सामर्थ्य नहीं है।
251. कदा दास्यसि ?	कब देगा ?
252. मासद्वयाऽनन्तरम्।	दो महीने के पश्चात्।
253. यद्येतावति समये न दास्यसि चेत्तर्हि राजनियमान्निग्रहीष्यामि।	जो तू इतने समय में न देगा तो राजप्रबन्धक से पकड़ा के लूंगा।
254. यद्येवं कुर्य्यां तर्हि तथैव ग्रहीतव्यम्।	जो ऐसा करूं तो वैसे ही लेना।
255. भो राजन् ! ममायमृणं न ददाति।	हे राजन् ! मेरा यह ऋण नहीं देता।
256. यदा तेन गृहीतं तदानीन्तनः कश्चित् साक्षी वर्त्तते न वा ?	जब उसने लिया था उस समय का कोई साक्षी वर्त्तमान है वा नहीं ?
257. अस्ति।	है।
258. तर्ह्यानीयताम्।	तो लाओ।
259. आनीतोऽयमस्ति।	लाया, यह है।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

प्रथम पृष्ठ

पृष्ठ 5 का शेष

मानवता की सेवा के लिए ...

में सेवा करने वाले एवं सैनिटाइजेशन का कार्य करने वाले कार्यकर्त्ताओं में सर्वश्री सुखवीर सिंह आर्य, बृहस्पति आर्य, वीरेश आर्य, राजवीर शास्त्री, राजू आर्य, राज कुमार आर्य, बिट्टू आर्य, मनीष आर्य, ओम आर्य, शिवा शास्त्री, विश्वास आर्य, लक्ष्य आर्य, करण आर्य, धर्मवीर आर्य, आशीष आर्य, मोहित आर्य, सुशील आर्य, दिनेश कुमार आर्य, संजय आर्य, मुकुंद आर्य, वैभव आर्य, वरुण आर्य, महेंद्र आर्य इत्यादि का करतल ध्वनि के साथ स्वागत करते हुए आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं दी।

आर्यसमाज के द्वारा किए जा रहे सेवा कार्यों में आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1 के सुयोग्य चिकित्सकों के माध्यम से ऑनलाइन चिकित्सा परामर्श की सुविधा भी प्रदान की जा रही है। इन समस्त सेवा कार्यों की प्रस्तुति को देखकर आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के पूर्व प्रधान आर्य पथिक श्री गिरीश खोसला ने बताया कि आज सारा विश्व कोरोना के भयंकर प्रकोप से जूझ रहा है। ऐसे संकट काल में प्रवासी भारतीयों द्वारा एंबुलेंस भेंट करके हम कोरोना मुक्ति महायज्ञ में एक विनम्र आहुति दे रहे हैं। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुरेश चंद्र आर्य जी ने कहा कि आपदा की इस घड़ी में एंबुलेंस से कोविड -19 स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ावा मिलेगा। ऑक्सीजन कंसंट्रेटर से अनेक मरीजों के प्राणों की रक्षा हुई है ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री विनय आर्य के अनुसार कोरोना संकट काल में जब अपने ही साथ छोड़ गए। तब आर्य कार्यकर्त्ताओं ने अपनी जान जोखिम में डालकर रोगियों की सहायता की। जिसमें एम.डी.एच., जे. बी.एम. ग्रुप ने भी सराहनीय योगदान किया है।

अब कोरोना मुक्ति केंद्रों को देशभर के विभिन्न राज्यों में भी स्थापित किया जाएगा। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य ने कहा - सर्वे सन्तु निरामया की भावना से जन जन तक सेवाएं पहुंच रही है, अन्य देशों में भारत का गौरव बढ़ा है। दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने कहा कि जो भी राहत सामग्री एवं साधन प्राप्त हो रहे हैं, उन सभी का समर्पित कार्यकर्ताओं द्वारा सेवा में सदुपयोग किया जा रहा है। इसके लिए सभी को बधाई और सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।

इसके बाद आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के पूर्व अधिकारी एवं आर्य नेता श्री देव महाजन जी द्वारा वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ एम्बूलेंस का उद्घाटन करते हुए कहा कि मानव सेवा कार्यों को निरन्तर आगे बढ़ाते रहेंगे। उद्घाटन कार्यक्रम में सभी अधिकारीगण रूप से उपस्थित रहे। शान्तीपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कोरोना काल में दिवंगत आत्माओं को आर्यसमाज की ओर से अश्रुपुरित श्रद्धांजलि

शोक समाचार

स्वामी जगदीश्वरानन्द जी का निधन

आर्यसमाज बी ब्लाक जनकपुरी के पूर्व मन्त्री, समाज सेवक, आर्य संन्यासी स्वामी जगदीश्वरानन्द जी (पूर्वनाम जगदीश गुलाटी) का दिनांक 19 मई, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018 के अवसर पर संन्यास दीक्षा ली थी।

श्रीमती विमला देवी आर्या का निधन

आर्यसमाज बिसरा (खैर) अलीगढ़ के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री कृपाल सिंह आर्य जी की धर्मपत्नी एवं जिला आर्य सभा अलीगढ़ के कोषाध्यक्ष श्री विजेन्द्र बालियान जी की भाभी श्रीमती विमला देवी आर्या जी का 10 मई, 2021 को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 19 मई को सम्पन्न हुई।

आचार्य घनश्याम जी का निधन

परोपकारिणी सभा के गुरुकुल ऋषि उद्यान जी के आचार्य श्री घनश्याम जी का 15 मई, 2021 को कोरोना संक्रमण के कारण अजमेर चिकित्सालय में निधन हो गया। वे संस्कृत साहित्य के पण्डित एवं अत्यन्त सरल स्वभाव के धनी थे।

श्री कस्तूर सिंह आर्य जी का निधन

आर्यसमाज शहर मुजफ्फर नगर के पूर्व मन्त्री एवं जिला सभा के पूर्व प्रधान श्री कस्तूर सिंह आर्य 'स्नेही' जी का 21 मई, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। लेखक भी थे और कई संगठनों से भी जुड़े थे।

स्वामी रामानन्द जी का निधन

आर्यसमाज के वरिष्ठ संन्यासी 108 वर्षीय श्री स्वामी रामानन्द आर्य जी का 26 मई, 2021 को आर्यसमाज पृथ्वीपुर नवदिया नवाबगंज बरेली (उ.प्र.) में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्री जितेन्द्र आर्य जी का निधन

आर्यसमाज इन्द्रपुरी के पूर्व मन्त्री एवं आर्यसमाज मॉडल बस्ती के संस्थापक सदस्य श्री लाला दौलत राय जी के सुपौत्र श्री जितेन्द्र आर्य जी का 18 मई, 2021 को लगभग 62 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 21 मई को ऑनलाइन सम्पन्न हुई। वे वरिष्ठ अधिवक्ता श्री महेन्द्र प्रताप जी के भतीजे थे।

माता चन्द्रकान्ता बंसल जी का निधन

आर्यसमाज पंजाबी बाग विस्तार, नई दिल्ली की वरिष्ठ सदस्या माता चन्द्रकान्ता बंसल जी का दिनांक 8 मई, 2021 को लगभग 89 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 20 मई, 2021 को सम्पन्न हुई।

श्री ठाकुर दास गांधी जी का निधन

आर्यसमाज पंजाबी बाग विस्तार, नई दिल्ली की वरिष्ठ सदस्य श्री ठाकुर दास गांधी जी का 6 मई, 2021 को लगभग 79 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 18 मई को ऑनलाइन सम्पन्न हुई।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुदित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुदित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुदित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

श्री गोविन्द राम आर्य जी का निधन

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल (इन्दौर सम्भाग) के उप प्रधान श्री गोविन्द राम आर्य जी का 16 मई, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। वे एक चलती फिरती आर्यसमाज थे।

श्री भगवान सिंह जी का निधन

आर्यसमाज के वरिष्ठ आर्य संन्यासी एवं सीकर से सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती के ज्येष्ठ भ्राता एवं आर्यसमाज बालन्द के कोषाध्यक्ष श्री भगवान सिंह जी का 94 वर्ष की आयु में दिनांक 21 मई, 21 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

चौधरी अजीत सिंह जी का निधन

राष्ट्रीय लोक दल के अध्यक्ष एवं पूर्व प्रधानमन्त्री, आर्य नेता चौधरी चरण सिंह जी के सुपुत्र चौधरी अजीत सिंह जी का दिनांक 6 मई, 2021 को कोरोना संक्रमण से निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में 18 मई, 2021 को सम्पन्न हुई।

आर्यवीर श्री कमल ठाकुर को भ्रातृशोक

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के आर्य वीर एवं बिडला आर्य कन्या सी. सै. स्कूल के कर्मचारी श्री कमल ठाकुर जी के बड़े भाई श्री दीपक ठाकुर जी का दिनांक 19 मई, 2021 को 42 वर्ष की अल्पायु में निधन हो गया।

श्री रामस्वरूप शास्त्री जी को सुपुत्री शोक

आर्यसमाज यमुना विहार के संस्थापक सदस्य, पूर्व मन्त्री एवं प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्मानित अधिकारी श्री रामस्वरूप शास्त्री जी की सुपुत्री सुश्री पूनम आर्या जी का 21 मई, 2021 को 42 वर्ष की अल्पायु में अकस्मात निधन हो गया। वे कुछ समय से अवस्थ चल रही थीं और कोरोना संक्रमण से भी उबर चुकीं थीं।

कविराज वैद्य आत्माराम दूबे का निधन – आयुर्वेद शिरोमणि, राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त, आयुर्वेद जगत में अप्रतिम सेवाएं देने वाले कविराज(वैद्य) आत्माराम दुबे जी का 20 मई, 2021 को दिल्ली के मेदांता हॉस्पिटल में हो गया। वे कोरोना महामारी से ग्रसित हो गए थे। वैद्य जी, एक वंश परंपरागत,आयुर्वेद चिकित्सक थे, उनके पितामह और पिता भी आयुर्वेद चिकित्सक थे। वे आर्य समाज गोरखपुर के भी संरक्षक सदस्य थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

आर्यसमाज वैदिक छात्रवृत्ति - द्वितीय चरण

(वार्षिक छात्रवृत्ति योजना - ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणीयों के लिए)

जीवन प्रभात, अमेरिका तथा आर्यसमाज चैरिटेबल फाउंडेशन (ASCF), चेन्नई के तत्त्वावधान में।
गुरूकुल में अध्ययनरत योग्य विद्यार्थियों के लिए वार्षिक छात्रवृत्ति योजना द्वितीय चरण।

ARYASAMAJ CHARITABLE FOUNDATION

लाभ

- योग्यता के आधार पर, विद्यार्थी को एक वर्ष के लिए प्रतिमाह 4,000 /- रुपयों की छात्रवृत्ति दी जाएगी। इसके बाद वे फिर से आवेदन कर सकते हैं। (प्राप्त होनेवाली राशि का एक भाग विद्यार्थी के गुरुकुल में सीधे जमा की जाएगी और शेष राशि विद्यार्थी को प्रदान की जाएगी।)
- आर्यसमाज चैरिटेबल फाउंडेशन (ASCF) चुने गए विद्यार्थियों को कम्प्यूटर कौशल, अंग्रेजी भाषा कौशल सहित विभिन्न क्षेत्रों का प्रशिक्षण भी देगी।

योग्यता

- विद्यार्थी को वर्तमान में भारत के वैदिक गुरुकुल में अध्ययनरत होना अनिवार्य है।
- आयु सीमा - 12 वर्ष के ऊपर

आवेदन

- विद्यार्थी अपना आवेदन कभी भी कर सकते हैं।
- नीचे दिए गए लिंक का उपयोग करके ऑनलाइन आवेदन पत्र भरें: http://davchennai.org/registrations/
- आपके आवेदन के बारे में अधिक जानकारी के लिए, आपके आचार्य/आचार्या जी से संपर्क किया जाएगा।
- आपको ऑनलाइन (Zoom) द्वारा साक्षात्कार (इंटरव्यू) में भाग लेने की आवश्यकता होगी।
- विद्यार्थियों का चयन शैक्षिक उपलब्धि, आध्यात्मिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण पर आधारित होगा।

संपर्क करें

+91-98906 01828 (श्री अंकुश शास्त्री)
+91-96544 94154 (श्री शिव कुमार जी)

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 24 मई, 2021 से रविवार 30 मई, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 27-28/05/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 26 मई, 2021

पृष्ठ 3 का शेष

किया। आर्य समाज द्वारा कोरोना पीड़ितों के तीमारदारों, झुग्गी बस्तियों के मजदूरों, गरीब निर्धनों को प्रतिदिन 10 हजार लोगों को सुबह शाम स्वच्छ, पौष्टिक भोजन बनाकर वितरण किया, झुग्गी बस्तियों में सेनिटाइजेशन हो या पर्यावरण शुद्धि के लिए ई रिक्शा पर यज्ञ रथ बनाकर गली गली में वेदमंत्रों के साथ यज्ञ हो हर सेवा कार्य को पूरे समर्पण भाव के साथ किया।

ज्ञात हो कि गत दिनों श्री आदेश गुप्ता जी, अध्यक्ष बी जे पी दिल्ली प्रदेश, सांसद श्री मनोज तिवारी, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री सत्यपाल सिंह जी, सांसद बागपत लोकसभा इत्यादि महानुभावों ने स्वयं आर्य समाज के सेवाकार्यों का निरीक्षण कर सराहना की। हालांकि आर्य समाज के सेवा कार्यों को इंडिया टीवी पर भी विस्तार से दिखाया और प्रशंसा की थी। श्री आदेश गुप्ता जी ने कहा कि कोरोना महामारी में आर्य समाज दिल्ली की ओर की जा रही सेवाएं सरहनीय हैं। आर्य समाज ने ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर बैंक बनाकर जो लोगों की जान बचाई है यह सबसे बड़ी मानव सेवा है। इसके साथ ही जरूरत मंद लोगों को पका हुआ भोजन प्रदान करना भी बड़ी सेवा है।

श्री आदेश गुप्ता जी ने आर्य समाज दिल्ली के सेवाकार्यों की प्रशंसा करते हुए आर्य समाज अमेरिका की सराहना की। उन्होंने कहा कि आर्य समाज अमेरिका के सहयोग से ऑक्सीजन कंस्ट्रेटर बैंक बनाने में अपना अमूल्य योगदान देने का मतलब है कि कोरोना के खिलाफ लड़ाई में आर्य समाज राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी भूमिका निभा रहा है, इसके आर्य समाज अमेरिका और दिल्ली के सभी अधिकारियों और कार्यकर्ताओं को बधाई।

श्री आदेश गुप्ता के साथ श्री मनोज तिवारी जी ने जरूरतमन्दों को लिए तैयार किए जा रहे भोजन और ऑक्सीजन कंस्ट्रेटर बैंक को देखकर कहा कि आर्य समाज द्वारा की जा रही सेवा बहुत ही प्रेरणा देने वाली है।

डॉ सत्यपाल सिंह जी ने कहा कि मानव सेवा आर्य समाज का मूलमन्त्र है, जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण हमारे सामने है।

श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली सभा ने बताया कि सेवा के क्षेत्र में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कोरोना की परिस्थितियों को देखते हुए और आगे बढ़ा रही है, भारत की सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओं के माध्यम से पूरे देश में जरूरतमन्दों को सहायता दी जाएगी।

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करते हुए मानव सेवा को सबसे बड़ी ईश्वर भक्ति बताया। ❑

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह